CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दी 900
13G2
42
19332

समाज विकास माला

संत एकनाथ

भारतीय मण्डल प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दी 900
5.13552
1.9552

समाज विकासमाला

संत एकनाथ

भारतीय मण्डल प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाज-विकास-माला : १३५

संत एकनाथ

महाराष्ट्र के संत का परिचय और वचन

हि. १००

लेखक
श्रीपाद जोशी

सम्पादक
यशपाल जैन

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९६१
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : १९६१
मूल्य
४० सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
राष्ट्रभाषा प्रिन्टर्स
क्वीन्स रोड, दिल्ली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाज-विकास-माला

हमारे देश के समाने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ काशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के विना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग वढ़ गई है, जो वहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो आर जो मोटे टाइप में वढ़िया छपी हों।

इस पुस्तक-माला को हमने इन्हीं वातों को सामने रखकर चालू किया है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में पाठकों को सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाठकों से

इस माला में हम कई संतों का परिचय दे चुके हैं। इस पुस्तक में हम महाराष्ट्र के महान् संत एकनाथ की जानकारी दे रहे हैं।

स्वामी एकनाथ का जन्म महाराष्ट्र में हुआ था, लेकिन उनकी जीवनी और उनके वचन सबके लिए लाभदायक हैं। उनके जीवन की एक-एक घटना और उनका एक-एक वचन सबको बड़ी भारी सीख देते हैं।

इस पुस्तक को आप ध्यान से पढ़ें और दूसरों को भी पढ़वायें। हमें पूरा विश्वास है कि इसके पठन-पाठन से आपको बड़ा लाभ होगा।

—सम्पादक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सन्त एकनाथ

: १ :

ऊंचे दर्जे के सन्त

आजाद भारत के संविधान में छुआछूत मानना गुनाह करार दिया गया है। पिछले पच्चीस-तीस बरसों से इस बुराई को दूर करने का आन्दोलन चलाना पड़ा और आज भी चलाया जा रहा है। बीसवीं सदी के शुरू में महात्मा गांधी ने किसीको अछूत मानकर उसके साथ वैसा व्यवहार करने के खिलाफ बड़ा जोरदार प्रचार किया और लोगों को समझाया कि जात-पांत और ऊंच-नीच का भेदभाव खतरनाक है। उससे समाज का बड़ा नुकसान होता है। अब हमारे देश के लोग यह अच्छी तरह समझ गये हैं कि किसीको अछूत मानना बड़ा बुरा है। भगवान् के दरबार में भी वह एक गुनाह है।

मगर यह बात कोई बिल्कुल नई या अनोखी नहीं है। हमारे देश में पुराने जमाने में भी ऐसे कई सन्त-महात्मा हुए हैं, जिन्होंने इस छुआछूत और जात-पांत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के खिलाफ आवाज ऊंची की थी। सन्त कबीर, सन्त तुकाराम, सन्त वेमन्ना आदि कई सन्त भारत के अलग-अलग सूबों में पैदा हुए थे, जिन्होंने इस कलंक को बुरा कहा। ऐसे ही एक सन्त लगभग चारसौ बरस पहले महाराष्ट्र में हुए थे, जिनका नाम था सन्त एकनाथ। सन्त एकनाथ ने कोरा उपदेश देने से सन्तोष नहीं माना, बल्कि अपने जीवन में इन बातों को उतारकर दिखा दिया। इस हिसाब से एकनाथ का स्थान भारत के सन्तों में बहुत ऊंचा समझा जाता है।

: २ :

जन्म और बचपन

सन्त एकनाथ का जन्म महाराष्ट्र के एक बहुत पुराने नगर पैठण में शक संवत् १४५५ अर्थात् सन् १५३२ ईस्वी में एक ब्राह्मण-परिवार में हुआ था। पैठण शहर 'दक्षिण की काशी' कहलाता है। इसका असल नाम 'प्रतिष्ठान' था, जो बिगड़कर पैठण बन गया है। गोदावरी नदी को दक्षिण भारत की गंगा कहा जाता है। इसके किनारे यह शहर बसा हुआ है। काशी की तरह यहां भी बहुत बड़े-बड़े पण्डित रहते थे और संस्कृत भाषा में ग्रंथ लिखते थे। 'निर्णय-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिन्धु' लिखनेवाले पंडित कमलाकर भट्ट और 'सिद्धांत कौमुदी' लिखनेवाले पण्डित भट्टोजी दीक्षित पैठण के ही थे। छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक करनेवाले काशी के पण्डित गागा भट्ट के पुरखा इसी पैठण के रहनेवाले थे।

महाराष्ट्र के बड़े-बड़े सन्तों और कवियों का भी पैठण के साथ सम्बन्ध रहा है। महानुभाव सम्प्रदाय के शुरू करनेवाले महात्मा चक्रधर, सन्त ज्ञानेश्वर, कृष्णदयार्णय, शिवदीन केसरी, अमृतराय आदि संतों के निवास से पैठण की भूमि पवित्र बनी हुई थी। उसी पैठण में सन्त एकनाथ का जन्म हुआ।

बस के रास्ते से पैठण अहमदनगर से चालीस मील और औरंगाबाद से तीस मील पर है। भारत के स्वतन्त्र होने से पहले यह शहर निजाम की हैदराबाद रियासत में शामिल था; पर अब वह महाराष्ट्र में आ गया है।

एकनाथ के परदादा सन्त भानुदास बड़े पहुंचे हुए आदमी थे। कहते हैं, जब विजयनगर के राजा कृष्ण-देवराय पंढरपुर के विट्ठल की मूर्ति विजयनगर ले गये तो ये भानुदास ही अपनी भक्ति के बल पर उस मूर्ति को वापस लाये थे। ऐसे सन्त-पुरुष के कुल में एकनाथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विट्ठल की मूर्ति

जैसे सन्त का जन्म होना कोई अचरज की बात नहीं थी।

एकनाथ के मां-बाप बचपन में ही स्वर्गवासी हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गये; इसलिए उनकी परवरिश उनके दादा और दादी ने की। एकनाथ को बचपन से ही भगवान् की भक्ति की लगन लग गई और विट्ठल की पूजा-प्रार्थना में वह संसार को भूल जाने लगे। वह अपनी ही उम्र के बच्चों को जमा करते और उनके सामने भगवान् की भक्ति की महिमा गाते।

छः बरस की उम्र में एकनाथ को जनेऊ दिया गया। उसके बाद बालक एकनाथ गुरु के घर जाकर पढ़ने लगा। थोड़े ही दिनों में उसने अपनी पढ़ाई पूरी कर दी। तब उसपर यह धुन सवार हुई कि वह भगवान् को अपनी आंखों से देखे। पर यह कोई मामूली बात तो थी नहीं। उसके लिए यह जरूरी था कि उसे रास्ता दिखानेवाला कोई गुरू मिल जाय। बारह बरस की उम्र में ही एकनाथ गुरु की खोज में चुपचाप निकल पड़े।

उससे किसीने कहा था कि देवगिरि के किले पर जनार्दन स्वामी नाम के एक पहुंचे हुए सन्त हैं, वह उसे भगवान् के दर्शन करायंगे। इसलिए एकनाथ देवगिरि की ओर चल दिया। यह किला पैठण से लगभग पच्चीस मील दूर था। इतनी दूर बालक एकनाथ पैदल चला गया और जनार्दन स्वामी के दर्शन होते ही उनके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

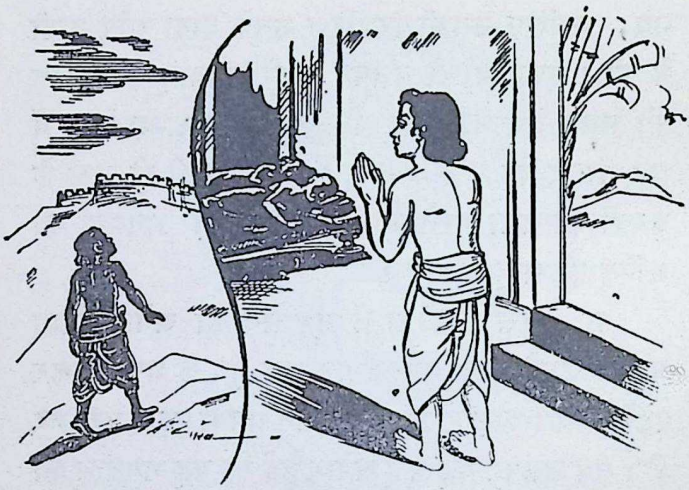

बालक एकनाथ चुपचाप घर छोड़कर निकल पड़े।

पैरों से लिपट गया। उसकी भक्ति देखकर स्वामीजी का दिल भर आया। उन्होंने उसे अपनी छाती से लगा लिया। उससे बातचीत होते ही स्वामीजी जान गये कि यह कोई मामूली लड़का नहीं है; यह तो भगवान् के दर्शन का प्यासा बहुत बड़ा महात्मा है। इसलिए उन्होंने एकनाथ को अपने पास अपना शिष्य बनाकर रख लिया। स्वामीजी श्री दत्तात्रेय के उपासक थे। एकनाथ भी उन्हींकी तरह श्री गुरु दत्तात्रेय महाराज के भक्त बन गये।

जनार्दन स्वामीजी के घर पर रहकर एकनाथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उनकी सेवा करने लगे। छोटा-बड़ा हर काम वह खुशी के साथ करते। जनार्दन स्वामी निजाम सरकार के बड़े अफसर थे। न्यायाधीश भी थे। उनके साथ एकनाथ दफ्तर चले जाते और दफ्तर के काम में भी उनका हाथ बंटाते।

एक पाई की भूल

स्वामीजीने एकनाथ को हिसाब-किताब रखने का काम सौंप दिया था। एकनाथ यह काम बड़ी होशियारी से करते। एक दिन हिसाब जांचते समय उन्होंने देखा कि हिसाब में कहीं पर एक पाई की भूल हो गई है। उन्होंने काफी जांच-पड़ताल की, मगर गलती का पता नहीं लगा। एकनाथ बड़े बेचैन हो गये।

आखिर रात को जब जनार्दन स्वामी सो गये तो एकनाथ चुपके-से उठे और दूसरे कमरे में दिया जलाकर हिसाब की बहियां जांचने लगे। चार, पांच, छः बार उन्होंने सारे हिसाब जांचे, मगर भूल थी कि हाथ नहीं आती थी। सारी रात इसीमें बीत गई। एकनाथ की सुध-बुध खो गई। बस उसी एक पाई की खोज में वह खो गये।

आखिरकार भूल का पता लग गया। एकनाथ ने खुशी से ताली बजाई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"क्यों बेटा, किस बात की खुशी हुई है तुम्हें ?" जनार्दन स्वामी ने उनसे पूछा। वह अपनी नींद पूरी हो जाने के बाद वहां जा पहुंचे थे और एकनाथ की तल्लीनता देखते रहे थे।

एकनाथ ने शरमाते और सकुचाते हुए सारा हाल उन्हें कह-सुनाया। स्वामीजी बोले, "जो आदमी एक पाई की भूल को खोज निकालने के लिए धेले का तेल खर्च करे और सारी रात जागता रहे, उसके लिए भगवान् का दर्शन बिल्कुल असम्भव नहीं है। मेरा आशीर्वाद है कि तुम्हें भगवान् के दर्शन शीघ्र ही होंगे।"

बहादुर एकनाथ

अपने इलाके में अमन-चैन रखने की जिम्मेवारी जनार्दन स्वामी पर थी। वह जिस तरह पहुंचे हुए साधु थे, उसी तरह एक बड़े सूरमा भी थे। चोर-डाकुओं और गद्दारों का मुकाबला करने के लिए उन्हीं-को घोड़े पर सवार होकर जाना पड़ता। उनके साथ रहने पर एकनाथ भी घोड़े पर बैठना और तलवार चलाना सीख गये।

एक बार हुआ क्या कि स्वामीजी ध्यान लगाये बैठे थे। इतने में एक सिपाही ने आकर खबर दी कि, "कुछ लुटेरों ने पड़ोस के गांव पर हमला बोल दिया है और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गांववाले उनका डटकर मुकाबला कर रहे हैं। मगर लुटेरे बहुत ज्यादा और जालिम हैं। उनके सामने गरीब गांववाले ज्यादा देर नहीं टिक सकते। अगर स्वामीजी उनकी मदद के लिए नहीं पहुंचेंगे तो बेचारे बरबाद हो जायंगे।"

युवक एकनाथ ने सिपाही से कहा, "अच्छी बात हैं, स्वामीजी अभी तैयार होकर आ जाते हैं।"

मगर एकनाथ जानते थे कि स्वामीजी ध्यान लगाये बैठे हैं और वह तीन-चार घण्टे तक उसी तरह बैठे रहेंगे। इसलिए उन्होंने स्वामीजी के कपड़े पहने, जिरह-बख्तर चढ़ाया और मुंह पर जाली ताने स्वामी-जी के ही घोड़े पर सवार होकर किले से बाहर निकले। सबने समझा जनार्दन स्वामी ही जा रहे हैं। उनके साथ और भी सिपाही हो लिये और थोड़ी ही देर में उस गांव में पहुंचकर उन्होंने लुटेरों को बड़ी बुरी तरह परास्त करके भगा दिया।

वहां से लौटकर एकनाथजी ने अपने कपड़े उतारे और चुपचाप अपने गुरु की सेवा में लग गये।

शाम को जब उस गांव के लोग स्वामीजी से मिलने आये और उनके उपकारों की चर्चा करके उन्हें दुआएं देने लगे तो जनार्दन स्वामी की समझ में कुछ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नहीं आया। उन्होंने एकनाथ की ओर देखा। एकनाथ ने संकोच से गर्दन झुका ली। जब वे लोग चले गये तो स्वामीजी ने एकनाथ से पूछा, "क्यों बेटा, इतनी बड़ी बहादुरी तुमने कैसे दिखाई ?"

"महाराज, मैं वह सब नहीं जानता। मैंने आपका नाम लिया और डाकुओं पर धावा बोल दिया। आगे क्या हुआ, मुझे कुछ भी मालूम नहीं।"

"शाबाश बेटा ! तुमने यह जान लिया कि भगवान् का नाम लेकर हमें अपना कर्तव्य किये जाना चाहिए और उसके फल की चिन्ता हमें नहीं करनी चाहिए। अब विश्वास करो कि भगवान् तुम्हें जल्दी ही दर्शन देंगे।" गुरु ने कहा।

भगवान् के दर्शन

एक दिन जनार्दन स्वामी एकनाथ से बोले, "देखो बेटा, इसी किले पर एक जगह जंगल में भगवान् दत्तात्रेय की पादुकाएं हैं, उनका दर्शन आज हम साथ जाकर करें।"

"जैसी गुरुदेव की आज्ञा!" कहकर एकनाथ उनके साथ हो लिये।

थोड़ी ही देर में वे दोनों एक घने जंगल में पहुंचे जहां एक उदुम्बर (गूलर) के पेड़ के नीचे भगवान्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दत्तात्रेय की दो खड़ाऊं थीं। गुरु-शिष्यों ने खड़ाऊं पर माथा झुकाया। इतने में वहांपर एक बाबाजी आ गये, जिनके साथ दो-चार कुत्ते-कुतियां थे। हाथ में भिक्षापात्र था।

उन बाबा को देखते ही जनार्दन स्वामी उनकी तरफ दौड़े और दोनों ने खूब प्रेम से एक-दूसरे को गले लगाया। फिर वे दोनों न जाने कौन-सी भाषा में बातें करने लगे। एकनाथ दूर एक तरफ बैठ गये।

थोड़ी देर बाद बाबाजी ने अपने लकड़ी के कटोरे में कुतिया का दूध निकाला और अपनी झोली में से रूखी रोटी निकालकर उसमें भिगो दी। फिर दोनों ने उस एक ही बर्तन में वह रोटी खाई।

एकनाथ समझ गये कि यह कोई मामूली बाबा नहीं हैं। इतने में जनार्दन स्वामी ने उनसे कहा, "बेटा, यह कटोरा तो जरा धो ला।"

एकनाथ ने वह कटोरा लिया और पास ही के झरने पर जाकर उसमें थोड़ा पानी डाला और उसे प्रसादी समझकर पी गये।

स्वामीजी यह सब देख रहे थे। वह बाबाजी से बोले, "महाराज, क्या अभी तक यह आपकी कसौटी पर खरा नहीं उतरा है? दे दीजिये न दर्शन उसे!"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बाबाजी मुस्कराये।

दूसरे ही क्षण एकनाथ देखते क्या हैं कि वहां से बाबाजी गायब हो चुके हैं और उनकी जगह पर श्रीदत्तात्रेय प्रकट हुए हैं--तीन मस्तक, छः हाथ, बगल

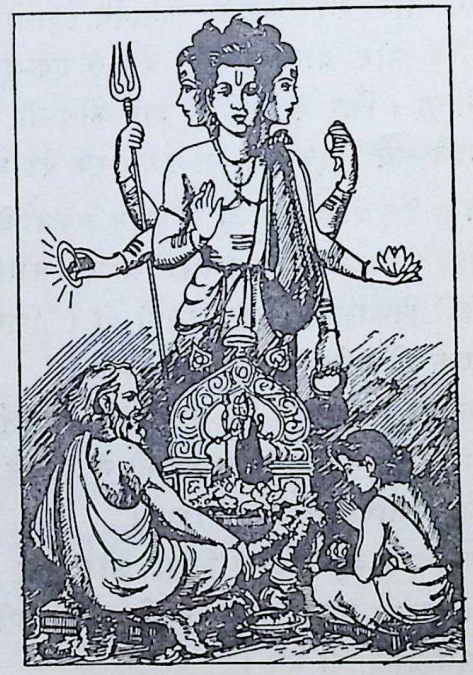

भगवान् दत्तात्रेय के दर्शन

में झोली, गेरुआ पहने हुए, पांव में खड़ाऊं, इधर-उधर दो-चार कुत्ते-कुतियां।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह दृश्य देखते ही एकनाथ दौड़ पड़े और उन्होंने दत्तमहाराज के पांव पकड़ लिये। भगवान् ने प्यार से उनके सिर पर हाथ फेरा और कहा, "बेटा, तुम अपना जीवन संसार की भलाई में लगाओ!"

और दूसरे ही क्षण भगवान् अन्तर्धान हो गये।

: ३ :

तपस्या और तीर्थ-यात्रा

भगवान् दत्तात्रेय महाराज के दर्शन होने के बाद एकनाथ ने अपने गुरु जनार्दन स्वामी की आज्ञा से उसी स्थान पर तपस्या करना शुरू किया। सुबह से शाम तक वह तपश्चर्या करते रहते, अर्थात् पालथी मारकर भगवान् का ध्यान लगाते रहते।

तपस्या पूरी हो जाने के बाद जर्नादन स्वामी अपने इस शिष्य को लेकर भारत की यात्रा के लिए निकले।

घूमते-घामते वह नासिक पहुंचे। वहां जनार्दन स्वामी अपने शिष्य से बोले, "बेटा, अबतक तुम अपने को लायक बनाने के लिए पढ़ते-गुनते रहे। अब तुम्हें अपना ज्ञान औरों को देना चाहिए। ज्ञान सिर्फ लेना ही नहीं होता, उसे देना भी होता है। मैंने तुम्हारे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लायक एक काम सोचा है। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम उसे अच्छी तरह कर सकोगे।"

"गुरुजी की आज्ञा सिर आंखों पर !" एकनाथ ने नम्रता के साथ कहा।

"'भागवत' का अनुवाद मराठी में करने की जरूरत है। तुम जानते ही हो कि यह ग्रंथ कितना अच्छा है। मगर संस्कृत में होने से सब लोग उससे लाभ नहीं उठा सकते। इसलिए तुम उसे मराठी भाषा में लिख दो।"

"क्या इतना कठिन काम मुझसे होगा, गुरुजी ?" एकनाथ ने पूछा।

"भगवान् की कृपा से अवश्य तुम्हें उसमें सफलता मिलेगी।" स्वामीजी ने कहा।

उसी जगह एकनाथ ने 'भागवत' का मराठी अनुवाद ही नहीं, बल्कि उसकी पूरी टीका मराठी में लिखनी शुरू की। पहले उन्होंने मूल भागवत के दूसरे स्कन्द के नौवें अध्याय से ३२, ३३, ३४, ३५ ये चार श्लोक लिये, जिनमें आदिनारायण ने ब्रह्मा को इस सृष्टि की रचना करने की आज्ञा देते समय जो बातें कहीं थी, उनका जिक्र आया है। इन चार श्लोकों को लेकर एकनाथ ने १०३६ दोहे लिखे। इन दोहों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मराठी में 'ओवी' कहा जाता है।

नासिक के पंडितों ने जब एकनाथजी का यह मराठी 'चतुःश्लोकी भागवत' सुना तो वे एकनाथ का लोहा मान गये। आजतक भागवत की इतनी अच्छी टीका मराठी में किसीने नहीं की थी। जनार्दन स्वामी ने वह टीका सुनकर अपने शिष्य से कहा, "बेटा, मुझे तुमसे यही आशा थी। मेरी गुरु-दक्षिणा मुझे अब मिल गई। पर याद रहे, इस काम को यहीं नहीं छोड़ना है। जीवन-भर तुम्हें संस्कृत भाषा में बन्द विचारों को जनता की भाषा में लाकर साधारण जनता को ज्ञानी बनाना है। अब मेरा काम पूरा हो गया है। तुम चारों धाम घूम आओ और पैठण में रहकर इस काम को करते जाओ। मैं देवगिरि लौट जाता हूं।"

इसके बाद जर्नादन स्वामी देवगिरि लौट गये और एकनाथ आगे चले गये। गुरुजी के बिछुड़ जाने से एकनाथ को बड़ा दुःख हुआ। मगर उनकी आज्ञा के आगे वह क्या कह सकते थे? पंछी का बच्चा हमेशा मां के साथ एक घोंसले में तो रह ही नहीं सकता। किसी-न-किसी दिन उसे अपने पंखों की ताकत आजमानी ही पड़ती है। इसलिए वह अकेले ही निकल पड़े। मगर गुरु का ध्यान एक घड़ी के लिए भी उनके मन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

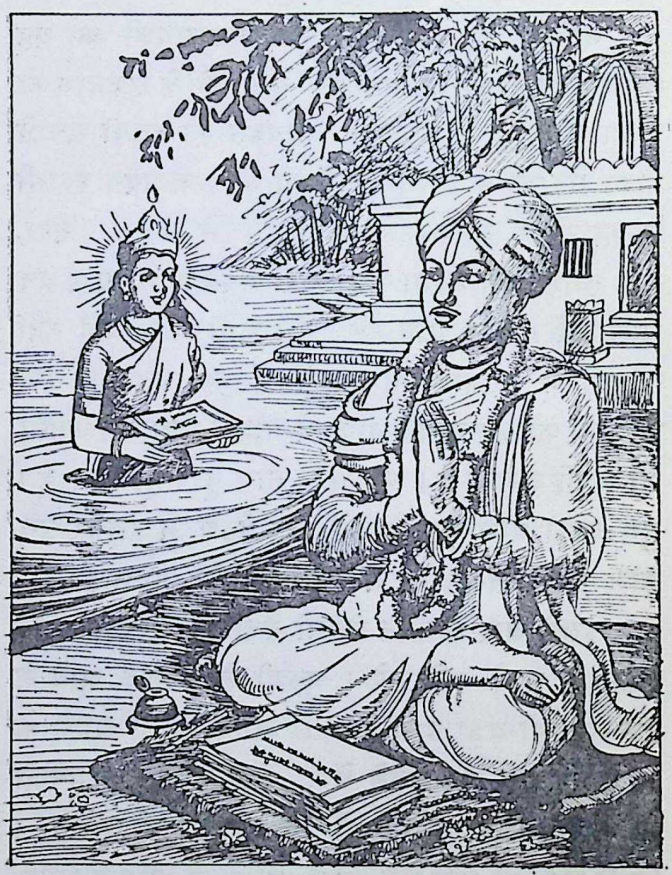

एकनाथ ने मराठी में 'भागवत' की रचना शुरू की।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से नहीं गया। वह अपने गुरु के साथ इतने एकरूप हो गये थे कि अपनी कविताओं में अपने नाम के साथ उन्होंने गुरु के नाम को भी गूंथ लिया। उनकी कविताओं की आखिरी पंक्ति में आज भी जब हम 'एका जनार्दनीं' पढ़ते हैं तो उनकी गुरुभक्ति के हम कायल हो जाते हैं।

: ४ :

गृहस्थाश्रम में

कई बरस तक तीर्थ-यात्रा करने के बाद पच्चीस बरस की उम्र में एकनाथ महाराज पैठण वापस लौटे और अपने गुरु की आज्ञा से विवाह करके गृहस्थ बन गये। आम तौर पर यह समझा जाता है कि भगवान् की भक्ति करने के लिए घर-बार छोड़कर संन्यासी बन जाना पड़ता है। मगर एकनाथ ने अपने उदाहरण से यह साबित कर दिया कि आदमी घर-गिरस्ती में रहकर भी बहुत बड़ा सन्त बन सकता है। सौभाग्य से उनकी श्रीमती गिरिजादेवी बड़ी ही साध्वी और पतिव्रता स्त्री थीं। उन्होंने अपने पति के काम में कभी बाधा नहीं डाली; बल्कि अपनी तरफ से वह उनकी भरसक मदद ही करती रहीं। उनके कारण एकनाथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का घर सुख-शांति से हमेशा भरा-पूरा रहने लगा और संसार के लोगों के लिए वह एक नमूना बन गया। उनके तीन बच्चे हुए। बड़ी लड़की गोदावरी का बेटा मुक्तेश्वर मराठी भाषा का एक महान् कवि हुआ। दूसरी लड़की उमा का बेटा तंजौर (मद्रास) में माधव स्वामी के नाम से आज भी मशहूर है। एकनाथजी का बेटा हरि पण्डित बहुत कर्मठ और विद्वान् निकला। उसे संस्कृत का बड़ा अभिमान था और शुरू-शुरू में उसने मराठी में कविता करने पर अपने पिता का घोर विरोध किया। पर आगे चलकर वह अपने पिता की महानता को समझ गया।

एकनाथ की सहनशीलता

एकनाथ बड़े ही शांत स्वभाव के थे। उन्हें कोई नाहक सताता तो वह उसे चुपचाप सहन कर लेते थे। इससे लोग उन्हें महात्मा मानने लगे। पर इसीसे कुछ बुरे लोग उनसे जलने भी लगे। ऐसे लोगों में एक मुसलमान फकीर था। उसे यह देखकर बड़ी जलन होती कि लोग एकनाथ के पीछे इतने पागल हो गये हैं।

एक रोज नाथजी गोदावरी में नहाकर घर आ रहे थे। इतने में उस मुसलमान ने उन्हें देखा और उनके बदन पर थूक दिया। एकनाथ कुछ नहीं बोले। वह चुप-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चाप लौट गये और फिर नहा आये। उस आदमी ने फिर उनके शरीर पर थूक दिया। नाथजी फिर नहा आये। फिर थूका। फिर नहाये। इस तरह एकसौ आठ बार हुआ। आखिरी बार वह नहाकर आये और इन्तजार करने लगे कि वह मुसलमान कब थूकता है। पर उस आदमी को बड़ा पछतावा हुआ और वह अपने ही हाथों से अपने गालों पर थप्पड़ लगाता हुआ बोला, "महाराज, आप तो मुरशिद हैं, मौला हैं। मैं बड़ा गुनहगार हूं, आप मुझे माफ करें।"

इसपर नाथजी मुस्कराकर बोले, "भैया, इसमें बुरा मानने की क्या बात है? तुम्हारे ही कारण तो आज मुझे एकसौ आठ बार गंगा नहाने का पुण्य मिला।"

पितरों का भोजन अछूतों को खिलाया

दूसरे सन्तों में और एकनाथ में एक भारी अन्तर था। नाथजी यह समझ गये थे कि हर इन्सान में भगवान् है; इसलिए ऊंच-नीच या जात-पांत का भेदभाव उनके मन में नहीं था। मगर सिर्फ सबको समान मानकर ही वह बैठे नहीं रहे। इस बात को उन्होंने अमल में लाकर भी दिखा दिया। हरिजनों को खुल्लमखुल्ला अपनानेवाले एकनाथ जैसे सन्त विरले ही होंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक बार की बात है। एकनाथ के घर श्राद्ध था। ब्राह्मणों के लिए भोजन तैयार हो गया था। नाथजी ब्राह्मणों की राह देखते हुए दरवाजे में खड़े थे। इतने में फटे-पुराने चीथड़े पहने कुछ अछूत वहां से निकले। जब उस भोजन की खुशबू उनकी नाकों में पहुंची तो वे आपस में बोले, "कैसा बढ़िया खाना पक रहा है। क्या हम लोगों को ऐसा खाना कभी नसीब हो सकता है? यह तो ब्राह्मण देवताओं का ही भाग्य है कि उन्हें ऐसा खाना खाने को मिलता है।"

नाथजी ने ये बातें सुनीं तो उनका दिल भर आया। उन्होंने उन अछूतों को अन्दर बुलाया और पितरों के लिए बनाया हुआ सारा भोजन उन्हें परोस दिया। बेचारे अछूत भरपेट खाना पाकर तृप्त हुए और नाथजी को आसीस देते हुए चले गये।

बाद में एकनाथजी ने फिर से भोजन बनवाया और ब्रह्मणों को न्यौता दिया। मगर ब्राह्मण नाराज हुए। वे बोले, "तुमने हमसे पहले अछूतों को भोजन खिलाकर हमारा अपमान किया है। हम तुम्हारे घर भोजन नहीं करेंगे।"

इसपर, कहते हैं, एकनाथ ने अपने पितरों से प्रार्थना की कि वे आप आकर भोजन करें और उनकी प्रार्थना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मानकर उनके पुरखा उनके घर आकर भोजन कर गये।

हो सकता है, पितर स्वयं न आये हों, दूसरे समझदार ब्राह्मण ही आये हों, मगर उन दिनों अछूतों को ब्राह्मणों का भोजन खिलाना सचमुच बड़ी भारी बात थी।

इसी तरह की एक और कहानी है। एक दिन एकनाथ गोदावरी में नहाकर घर लौट रहे थे कि इतने में उन्होंने एक हरिजन बालक को रोते देखा। वह बच्चा अपनी मां से बिछुड़ गया था। ऊपर से सूरज भगवान् आग बरसा रहे थे और नीचे गरम बालू बच्चे के नन्हे तलुवों को झुलसा रही थी। आसपास कई लोग खड़े उस बच्चे की दुर्गति देख रहे थे, मगर अछूत बच्चे को कौन छुये? इतने में एकनाथ की निगाह उसपर पड़ी और उनका दिल तिलमिला उठा। वह झट-से आगे बढ़े और उस बच्चे को उन्होंने गोद में उठा लिया। थोड़ी देर इधर-उधर खोजने के बाद उस बच्चे की मां मिल गई तो उसे वह बच्चा सौंपकर नाथजी ने कहा, "देखो मां, बच्चे तो भगवान् के अवतार होते हैं। उन्हें इस तरह तकलीफ नहीं देनी चाहिए।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काशी की गंगा गधे को पिलाई

एक बार एकनाथ काशी-रामेश्वर की यात्रा करने गये थे। काशी की गंगा एक बड़े बरतन में भरकर वह साथ लाये थे, जिसे उन्हें रामेश्वर में पहुंचाना था। अचानक एक दिन उन्होंने देखा कि कड़ी धूप में एक गधा प्यास से छटपटाता हुआ प्राण छोड़ रहा है। वहां आसपास कहीं भी पानी की एक बूंद तक नहीं थी। एकनाथ के दूसरे साथी उस गधे को देखकर आगे चले गये। मगर जब एकनाथ ने उस गधे की हालत देखी तो उनका दिल न माना और उन्होंने साथ लाया हुआ गंगाजल उसे पिलाना शुरू कर दिया। यह देखकर सारे लोग दंग रह गये। किसीने कहा, "महाराज, इतनी दूर से पैदल चलकर आप यह गंगाजल लाये थे; उसे इस तरह क्यों बरबाद करते हैं?"

नाथजी ने हँसकर कहा, "यह गंगाजल की बरबादी नहीं, बल्कि उसका सबसे अच्छा उपयोग है। एक प्राणी के प्राण बचाने से भी बढ़कर भला कौन-सा पुण्य कार्य हो सकता है?"

अछूत के घर भोजन किया

ऐसे थे सन्त एकनाथ। मोम से भी अधिक कोमल हृदय के। दूसरे का दिल दुखाना वह जानते ही नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

थे। एक बार एक हरिजन लड़की हठ पकड़ बैठी कि मैं अपने घर, अपने हाथों, एकनाथ महाराज को भोजन खिलाऊंगी। उसे सभीने बहुतेरा समझाया, मगर वह किसी तरह न मानी। आखिर जब यह बात एकनाथ के कानों तक पहुंची तो वह हँसकर बोले, "इसमें कौन-कठिन बात है। मैं उस लड़की के घर जरूर भोजन करूंगा।"

और सचमुच वे उस अछूत के घर बड़े प्रेम से भोजन कर आये।

: ५ :

लोक-भाषा के हिमायती

दूसरे सभी सन्तों की तरह एकनाथ भी लोकभाषा के बड़े हिमायती थे। उन्होंने जीवन-भर संस्कृत भाषा में भरे हुए ज्ञान को मराठी के जरिये साधारण जनता तक पहुंचाने का ही काम किया। वह अपने भागवत में एक जगह लिखते हैं--

संस्कृत वाणी देवें केली। प्राकृत काय चोरापासोनि जाली?
असोतु या अभिमान भुली। वृथा बोलीं काय काज?

--लोग कहते हैं कि संस्कृत भाषा को देवताओं ने बनाया। तो क्या प्राकृत भाषा को चोर-डाकुओं ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बनाया है ? इस तरह की बातें व्यर्थ हैं। यह तो केवल अभिमान के कारण लोग ऐसा बोलते हैं।

और एक जगह वह कहते हैं--

मुक्ता फळालागीं सागरीं। बुडया देती नानापरीं।
तें सां पडलियां घरीं विहिरीं। जो अव्हेरी तो मूर्ख॥
तैसी संस्कृत व्याख्यान आटाटी। अतिकष्टें परमार्थीं भेटी।
तें जोडल्या मराठीसाठीं। उपेक्षा दृष्टि न करावी॥

--मोतियों के लिए लोग सागरों में लगातार डुबकियां लगाते रहते हैं। ये मोती अगर घर के कुएं में मिल जायं तो क्या उनका त्याग करना चाहिए ? इस तरह जो आसानी से मिलनेवाले मोतियों का त्याग करे, उसे मूर्ख ही समझना चाहिए। इसी तरह संस्कृत भाषा में जो ज्ञान का भण्डार भरा हुआ है वहांतक पहुंचने में बड़े कष्ट होते हैं। वह भण्डार अगर मराठी में लाया जाय तो उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

काव्य-रचना

एकनाथ ने 'चतुःश्लोकी भागवत', 'एकादश स्कन्द की विस्तृत टीका', 'भावार्थ रामायण', दशम स्कन्द', 'रुक्मणी स्वयंवर', 'हस्तामलक' 'शुकाष्टक', 'आनन्द लहरी' आदि कई छोटे-बड़े ग्रंथ लिखे हैं, जिनके दोहों की तादाद लगभग पचहत्तर हजार तक है। महाराष्ट्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में एकनाथजी का भागवत घर-घर पढ़ा जाता था। उन्होंने संत ज्ञानेश्वर की लिखी 'ज्ञानेश्वरी' का संशोधन करके उसमें से दूसरे लोगों की कविताएं निकाल डालीं। इसलिए लोग मानते हैं कि एकनाथ स्वयं ज्ञानेश्वर के ही अवतार थे। इनके भागवत पर काशी के पंडितों ने बड़ी आपत्ति उठाई थी कि वह संस्कृत का ज्ञान मराठी में क्यों लाये। पर जब उन्होंने सारा भागवत सुना तो वे नाथजी की विद्वत्ता के कायल हो गये।

एकनाथ के बनाये हुए भजन आज भी महाराष्ट्र में बड़े प्रेम के साथ गाये जाते हैं। यहां नमूने के रूप में उनके कुछ पद हम देते हैं--

काया ही पंढरी आत्मा हा विठ्ठल।
नांद तो केवळ पांडुरंग ॥ १ ॥
दया क्षमा शांति हेचि वाळुवंट।
मिळाला से थाट वैष्णवांचा ॥ २ ॥
ज्ञान ध्यान पूजा विवेक आनंद।
हाचि वेणुनाद शोभत से ॥ ३ ॥
देहीं देखिली पंढरी जनीं वनीं।
एका जनार्दनीं वारी करीं ॥ ४ ॥

--हमारा शरीर पंढरपुर है और हमारा आत्मा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विट्ठल है। इस शरीर में भगवान् पांडुरंग निवास करते हैं। दया, क्षमा, शांति नदी का रेतीला पाट है, जहां वैष्णव भक्त जमा होकर भगवान् का कीर्तन करते हैं। ज्ञान, ध्यान, पूजा, विवेक और आनन्द यही भगवान् की बांसुरी की आवाज है। एकनाथ ने अपने शरीर में पंढरपुर के दर्शन किये हैं।

सगुण चरित्रें परम पवित्रें हरिचीं वर्णावीं।
सज्जन वृन्दें मनोभावें आधीं वंदावीं ॥
संतसंगें अंतरंगे नाम बोलावें।
कीर्तनरंगीं देवासंनिध सुखेंचि डोलावें ॥१॥
भक्ति ज्ञाना विरहित गोष्टी इतरा न कराव्या।
प्रेम भरानें वैराग्याच्या युक्ती विवराव्या ॥२॥
जेणें करुनी मूर्ति ढसावी अंतरिं श्री हरिची।
ऐशी कीर्तन मर्यादा ही देवाचे घरची ॥३॥
अद्वय भजनें अखंड स्मरणें वाजवि करताळी।
एका जनार्दनीं मुक्ती होये तत्काळी ॥४॥

—हरि के परम पवित्र सगुण चरित्रों का गुणगान हम करें। पहले मनोभाव से सज्जनों का वंदन करें। सन्तों के साथ हृदय से भगवान् का नाम लें और कीर्तन में देव के साथ सुख से तल्लीन हों। भक्ति-ज्ञान को छोड़कर और बातें न करें और प्रेम से वैराग्य के मार्गों का विवरण करें। ऐसा कीर्तन हम करें, जिससे श्री-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हरि की मूर्ति हमारे मन पर अंकित हो जाय। एकनाथ कहते हैं कि अखंड भजन और स्मरण करने से मनुष्य को तुरन्त मुक्ति मिल जाती है।

मन रामीं रंगलें। अवघें मनचि राम झालें।
सबाह्य अभ्यंतरीं अवघें रामरूप कोंदलें॥
चित्तचि हारपलें अवघें चैतन्य जाहलें।
देखतां देखतां अवघें विश्व मावळलें।
पाहतां पाहणेंपणा हरिला, सर्वस्वें ठकविलें॥१॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य लाभे आत्मस्थिति।
निर्धारितां न कळे रामरूपीं जडली प्रीति।
एका जनार्दनीं अवघा रामचि आदिअंतीं॥२॥

——मन राम के रंग में रंग गया। सारा मन राम-बन गया। अन्दर-बाहर राम का रूप भर गया। मन खो गया। सबकुछ चैतन्यमय हो गया। देखते-देखते सारा विश्व अस्त हो गया। सबकुछ छिन गया। भक्ति, ज्ञान, वैराग्य से आत्मस्थिति का भान हो गया। राम से प्रीति हो गई। एकनाथ कहते हैं कि शुरू से अन्त तक केवल राम-ही-राम है।

: ६ :

निधन

इस तरह लोगों को ज्ञान-भक्ति का मार्ग दिखाते हुए सन्त एकनाथ महाराज ६६ बरस की आयु में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फाल्गुन बदी ६, शक संवत् १५२१ अर्थात् सन् १५९८ के दिन परलोक सिधारे। कहते हैं कि गोदावरी के किनारे कीर्तन करते-करते वह नदी में उतर गये और इस तरह उन्होंने जल-समाधि ले ली। इसी फाल्गुन बदी ६ के रोज एकनाथ के गुरु जनार्दन

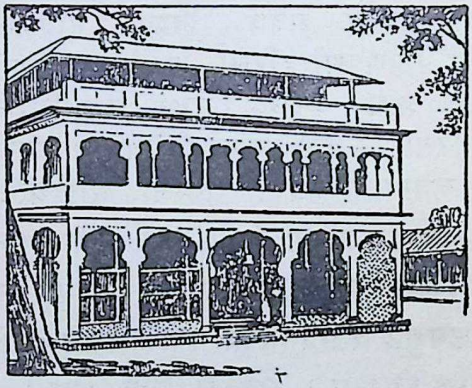

एकनाथ का समाधि-मंदिर

स्वामी का जन्म हुआ था, उन्हें दत्तात्रेय भगवान् ने दर्शन दिये थे और उनका स्वर्गवास हुआ था। एकनाथ महाराज पर स्वामीजी ने इसी दिन कृपा की थी और उन्हें अपना शिष्य बनाया था। इस प्रकार नाथ-षष्ठी का अपना स्थान है।

●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१३६१
९२

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. गांव सुखी, हम सुखी
११. निषाद और शबरी
१२. कितनी उमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१ बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६ तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१ बाजीप्रभु देशपांडे
३२. शिष्यम्बुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४ सहज की खेती
३५ कावेरी
३६ तीर्थराज प्रयाग
३७ ऊन की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी मेहता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६ धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कबों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५ मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करें
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हातं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर-जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी : भाग १
६८ सिंहासन-बत्तीसी : भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७० सूरदराज
७१ नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक
७३. हमारा संविधान
७४ राजेंद्रबाबू का बचपन
७५. परमहंस की कहानियां
७६. सोने का कंगन
७७. झांसी की रानी
७८. हुआ सवेरा
७९. बीरबल की बातें
८०. धन के जीते जीत
८१ धुरब्बी
८२. हरिद्वार
८३. सागर की सैर
८४. ज्ञानवान के रखवारे
८५. महामना मालवीय
८६. भर्तृहरि
८७. देवताओं का प्यारा
८८. देश यों आगे बढ़ेगा
८९. हमारे मुस्लिम संत
९०. नन्हा शकावीन
९१ स्वामी विवेकानंद
९२ आप भला, जग भला
९३. नासिक
९४. सूर के पद
९५. संत बेमन्ना
९६. आराम हराम है
९७. गोरा-बादल
९८. पाटलिपुत्र
९९. महर्षि अगस्त्य
१००. दानवीर कर्ण
१०१. शेख सादी
१०२. गोदावरी
१०३ कुम्हार की बेटी
१०४ नर्मदा
१०५ शंकराचार्य
१०६. अमरनाथ
१०७. ग[illegible]ई
१०८. पढ़ेंगे-लिखेंगे
१०९ कोणार्क
११०. मंगू भेया

मूल्य : प्रत्येक का [illegible]

हिन
१०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu